वैदिक प्रश्नोत्तरी

(सभा की वार्षिक रिपोर्ट सहित)

लेखक

परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

प्रकाशक

आर्य कुमार सभा (रजि०)

किंग्जवे, दिल्ली-११०००९

CamScanner से स्कैन किया गया

दो शब्द

आजकल यह सामान्यतः सुनने को मिलता है कि जनसामान्य की अध्ययन में रूचि नहीं हैं अतः पुस्तकें बिकती नहीं हैं, सिर्फ पुस्तकालय की शोभा बढ़ाती हैं। यह भी समाचार-पत्रों में कई बार पढ़ने को मिल जाता है कि आजकल प्रकाशक पाठक को नहीं अपितु सिर्फ पुस्तकालय-खरीद को ध्यान में रखकर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं और पुस्तकों की इसलिए भारी कीमत रखते हैं। पर प्रसन्नता की बात है कि आर्य कुमार सभा इसका अपवाद रही है और सभा की पुस्तकों का उत्तर व दक्षिण भारत की आर्य संस्थाओं, शिक्षा जगत, स्कूल-कॉलेजों व जन सामान्य ने सदैव स्वागत किया है। सभा का प्रकाशन-विभाग वैदिक प्रचारार्थ है। गत वर्ष निम्नलिखित पुस्तकें सभा के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित की गईं :—

१. मोक्ष की सीढ़ियां (२)—११०० प्रतिया

२. यज्ञ से प्रदूषण निवारण—११०० प्रतियां

श्री इकबाल राय बेदी का देहान्त ४-८-८९ को हुआ था, इस वियोग से सभा के अधिकारियों, सदस्यों व प्रेमियों का दायित्व बढ़ा ही है। यदि हम आप सब मिलकर उसके साहित्य-प्रचार के अधूरे कार्य को पूरा कर सकें तो यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ओम सपरा

फोन—७११३७१७ (वाचनालय) आचार्य आर्य कुमार सभा (पं०)

—७२५९०७३ (निवास) किंग्जवे, दिल्ली-९

CamScanner से स्कैन किया गया

॥ ओ३म् ॥

श्रद्धा पुष्पमाला का १०९ वां पुष्प

वैदिक प्रश्नोत्तरी

(सभा की वार्षिक रिपोर्ट सहित)

लेखक

परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

प्रकाशक

आर्य कुमार सभा (रजि०)
किंग्जवे, दिल्ली-११०००९

प्रथम बार : ११००   दूरभाष : ७११-३७१७   मूल्य : डेढ़ रुपया

श्री इकबाल राय बेदी के जन्म दिन
के अवसर पर प्रकाशित (१५-६-९२)

CamScanner से स्कैन किया गया

ओ३म्

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

यजु० २२ । २२ ॥

हिन्दी अर्थ

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हो, अरिदल विनाशकारी ।
होवें दुधारू गौएं, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल-फूल से लदी हों, ओषध अमोघ सारी ।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

कविता-अर्थ

हों विप्र हमारे वेद धनी क्षत्रिय इकले ले रोक अनी ।
गौएं हों उजले दूध भरी, वृष भार वहन में महाबली ॥
वाहन दें जब से शैल हिला, नगरी की लाज रखें महिला ।
युवकों की रण में कीर्ति बजे, हों सभा भवन में विनय से ॥
जब मांगे अम्बर जल बरसे, सुख संपत्ति से धरती सरसे ।
हमको न किसीसे कुछ भय हो, तेरी जय हो जय हो जय हो ॥

CamScanner से स्कैन किया गया

ध्वज-गान

ध्वजेयं मुदा वर्द्धते व्योम वातैः, समुड्डीयमानान्तिरिक्षे विशाले
महामण्डले मण्डिते रक्त वर्णे सुभासैं रवैभासते ओ३म् पताका
प्रबुद्धार्यवर्तैक देशे प्रशस्ता समस्तार्य वीरैवृता या समन्तात्। पुरा
ज्ञान ज्योतिः प्रदन्तं, पृथिव्यां, सुधा वेदवाण्या नुता गीतये च
समुद्धर्तु कामा वयम् आर्यवीराः, समुत्थाप्य तां विश्वमेतत्प्रसु-तम्
इयम् आर्य राष्ट्रांगभूता ध्वजसीत्, परा शक्ति रूपा ददातु
स्वशक्ति ॥

महामंगले विश्व शान्त्येक मूर्तें, सुकीर्तिः सदा वर्द्धताते प्रशस्था
समुद्घोषणा घोष्यतेवीरघोषैः, विजयिनीपताका विजयितां-२॥

ध्वज-गान

जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी।
विश्व—प्रेम—प्रतिमा अति प्यारी॥

सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह्लता सरसाने वाला।
साम्य-सुमन विकसाने वाला, विश्व-विमोहक भव-भयहारी॥

इसके नीचे बढ़ अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरीजन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी॥

इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्गति, दानव द्वैष दमन हों।
अति उज्जवल अति पावन मन हों प्रेम-तरंग बहे सुखकारी।

इसी ध्वजा के नीचे आकर ऊंच, नीच का भेद भुला कर।
मिले विश्व मुदमंगल गाकर, पंथाई पाखण्ड बिसारी॥

इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद-ज्ञान घर-घर में।
सुभग शांति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी॥

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य—अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन—ज्योति जगावें, त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी॥

आर्य जातिका सुयश अक्षयहो, आर्य ध्वजाको अविचल जय हो
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी॥

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रस्तावना

"वैदिक प्रश्नोत्तरी" नामक यह पुस्तिका इससे पूर्व केंद्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के "युवा उद्घोष" विशेषांक (संपादक--श्री अनिल आर्य) के अन्तर्गत उस पुस्तक के अंश के रूप में छप चुकी है। अब इसे प्रथम बार स्वतन्त्र पुस्तिका के रूप में लेखक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी आर्य जगत् के विद्वान लेखक व ओजस्वी संन्यासी हैं। आप निरन्तर साहित्य प्रकाशन के कार्य में रहते हैं। आशा है, बालक, युवा व वृद्ध सभी इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठायेंगे व अपने ज्ञान में वृद्धि करेंगे।

—प्रकाशन मंत्री
आर्य कुमार सभा

विषय-सूची

क्र० सं०		पृष्ठ
१.	प्रस्तावना	४
२.	श्री इकबाल राय बेदी	५
३.	सभा की वार्षिक रिपोर्ट	८
४.	वैदिक प्रश्नोत्तरी	१५
५.	विद्वानों की सम्मति	टाइटल पृष्ठ ३
६.	पुस्तक-सूची	टाइटल पृष्ठ ४

CamScanner से स्कैन किया गया

श्री इकबाल राय बेदी

"आर्यकुमार सभा, किंग्ज़वे, दिल्ली-९ व आर्य धर्मार्थ न्यास (रजि०) दिल्ली के संस्थापक व आचार्य श्री इकबाल राय बेदी, जो गुरु जी के नाम से प्रसिद्ध थे, का दुःखद देहावसान ४-८-८९ शुक्रवार रात पौने १२ बजे हो गया है। आप ७० वर्ष के थे। आपने सारी उम्र अविवाहित व बाल-ब्रह्मचारी रहकर बच्चों की सेवा की, निर्धन परिवारों व बच्चों को मासिक आर्थिक सहायता व छात्रवृत्तियां, व निःशुल्क पुस्तकें आदि प्रदान की। निःशुल्क डिस्पेंसरी, एक वाचनालय, एक पुस्तकालय खोले जो अब तक सफलतापूर्वक चल रहे हैं। आपने तमाम उम्र आर्यसमाज के माध्यम से हिंदी-संस्कृत प्रचार व समाज-सेवा की व सदैव खादी वस्त्रों का प्रयोग किया।

दि० ७-८-८९ को आयोजित एक श्रद्धांजलि सभा (चौथा) में स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, डॉ० सत्यकाम वेदालंकार, डॉ० प्रशांत कुमार वेदालंकार, डॉ० रमेशकुमार लौ, डॉ० शशिभूषण, आर्यसमाज किंग्ज़वे के पूर्व प्रधान ठाकरदास सपरा, प्रेम वोहरा, सत्यपाल भाटिया, तिलकराज आदि समाज सेवी व विद्वानों ने भाग लिया।"

आपने आजीवन आर्यसमाज के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार, कुमारों व युवकों में नैतिक मूल्यों का सूत्रपात करने, निर्धन छात्र-छात्राओं और परिवारों को निःशुल्क पुस्तकें, छात्रवृत्तियां व आर्थिक सहायता प्रदान करने में अपना जीवन लगाया। युवक-युवतियों बच्चों व बड़ों में उच्च मानवीय मूल्यों को अंकुरित करने के लिए आपने अपने जीवन काल में १०४ लघु पुस्तकें प्रकाशित कीं और कई नये लेखकों को आगे आने का अवसर दिया। कम मूल्य पर इन पुस्तकों का वितरण समस्त देश में स्कूलों-

CamScanner से स्कैन किया गया

कालेजों में घूम-घूमकर किया। आपको आदर के साथ गुरुजी कहा जाता था। छोटे-बड़े सभी आपको समान प्यार और सम्मान देते थे।

आपने सन् १९४९ में आर्य कुमार सभा की स्थापना की थी और अपनी समस्त व्यक्तिगत इच्छाओं को सामाजिक यज्ञ में आहुत कर दिया था, आजीवन ब्रह्मचारी रहकर अपना एक-एक मिनट बालकों की शिक्षा और समाज सेवा में लगा दिया। आपने लगभग २५ बार सम्पूर्ण देश की यात्रा की थी और अपने भ्रमण में हजारों स्कूलों, कालेजों और अन्य शैक्षणिक व सामाजिक संस्थाओं का जायजा लिया था, अपने सम्पर्क में आये हजारों छात्र-छात्राओं को निरन्तर आगे बढ़ने, नैतिक मूल्यों और मानवीय गरिमा को सम्मान देने के लिए सदैव प्रेरित किया।

पुस्तक प्रकाशन के अलावा आप धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन हर साल किया करते थे, वर्ष में दो बार भाषण, वाद-विवाद, संगीत, खेल कूद आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन करते थे और सफल छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करते थे। इसके अलावा आपको रेल मंत्रालय से सन् १९७६ में अवकाश प्राप्त करने पर जो भी धन पेंशन, ग्रेजुयटी आदि मिली, उन्होंने सब-कुछ यथार्थ में आर्य कुमार सभा व न्यास के माध्यम से समाजसेवा में लगा दिया। उन्होंने कभी अपने नाम, यश प्रसिद्धि की इच्छा या प्रयास नहीं किया और एक सच्चे वीतरागी की तरह निष्काम भाव से अपना जीवन लगा दिया। वे मूक योद्धा, अडिग संन्यासी की तरह आजीवन समाज के कमजोर वर्गों के लिए संघर्ष करते रहे। हिंदी के वे इतने प्रबल समर्थक थे कि वे निजी संस्थाओं और प्रतिष्ठानों में घूम-घूमकर उन्हें हिन्दी-प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। आपने कई वर्षों तक 'जीवन-संदेश' पत्रिका का भी सफलता-पूर्ण प्रकाशन किया।

—ओम सपरा
ए-२२, डा० मुकर्जी नगर
दिल्ली-९
फोन—७२५-९०७३ (निवास)

CamScanner से स्कैन किया गया

आर्य कुमार सभा (रजि०) किंग्जवे व

आर्य धर्मार्थ न्यास (रजि०)

के संस्थापक

त्यागमूर्ति स्व० इकबाल राय बेदी

(गुरुजी)

जन्म : १९२०

मृत्यु : १९८९

CamScanner से स्कैन किया गया

आर्यकुमार सभा, किंग्जवे दिल्ली की प्रगति (९१-९२)

प्रभु की असीम कृपा और प्रेरणा से २४ अप्रैल १९४९ को सभा की स्थापना स्व० श्री इकबाल राय द्वारा हुई थी। प्रारम्भ में सायं काल खेल, हवन, संध्या भाषण आदि होते थे। २१ सितम्बर १९५२ को सभा का प्रथम निर्वाचन और अन्तरंग सभा का निर्माण हुआ।

वर्तमान अधिकारी (१९९२-९३) इस प्रकार हैं—

प्रधान	श्री धीरज मलिक
आचार्य	श्री ओम प्रकाश सपरा
मंत्री	श्री प्रवीण ग्रोवर
कोषाध्यक्ष	श्री बदरी दत्त
पुस्तकाध्यक्ष	श्री सौरभ भाटि[illegible]
प्रकाशन मंत्री	श्री सत्य प्रकाश

अंतरंग सदस्य—सर्वश्री राजेन्द्र बेदी, डॉ० शशि भूषण, भुवन चंद्र, उमेश चंद्र तिवारी, अतुल सरदाना।

स्थापना के समय सभा की सदस्य संख्या १८ थी जो इस समय ७५ है।

सभा कुमारों का यज्ञोपवीत-संस्कार कराती है, इसके बिना कोई कुमार सभा का अन्तरंग सदस्य नहीं बन सकता। सभा का अपना हिन्दी टाईपराईटर भी है, जिससे सभा के सदस्य टाईप सीखकर योग्यता बढ़ाते हैं।

मासिक पत्रिका

नव युवकों की लेखन-कला को विकसित करने के लिए सभा एक मासिक पत्रिका 'जीवन संदेश' प्रकाशित करती थी। पहले यह टाईप होती थी फिर इसे वर्ष में एक बार प्रकाशित किया जाता था।

सभा समय-समय पर अपने सदस्यों का जन्म-दिन मनाती रहती है।

सभा के प्रयत्नों से काफी सदस्य सेन्ट-जान एम्बुलेन्स की प्राथमिक सहायता (First aid) की परीक्षा पास कर चुके हैं। अब तक चार पदक विजेता हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

दैनिक कार्यक्रम के अतिरिक्त सभा महापुरुषों की जयन्तियां, बलिदान दिवस और अनेक पर्व आदि मनाती रहती है।

सभा के सत्संग व कार्यक्रम वाचनालय-भवन विजयनगर दिल्ली में होते हैं।

राष्ट्रीय रक्षा कोष

सभा ने जनता के सहयोग से १००० रु० राष्ट्रीय रक्षा कोष में भेजे। इस वर्ष की गणतन्त्र-दिवस पर अन्तरंग सभा के सदस्यों ने राष्ट्र सेवा की शपथ ग्रहण की।

धार्मिक परीक्षा

सभा विद्यार्थियों की धार्मिक और सामाजिक भावना को बढ़ाने के लिए प्रत्येक वर्ष एक धार्मिक परीक्षा का आयोजन करती रहती है।

विरजानन्द छात्रवृत्ति

ऐसा अनुभव किया जाता रहा है कि अनेक विद्यार्थी प्रतिभाशाली होते हुए भी, आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण अपने जीवन में उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। ऐसे में आर्य कुमार सभा विद्यार्थियों की अमूल्य पढ़ाई में सहयोग देने के लिए पिछले कई वर्षों से स्कूल की उच्च कक्षाओं से संस्कृत, हिन्दी संगीत व विज्ञान पढ़ने वाले कुछ निर्धन परन्तु योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान करती आ रही है।

आपकी जानकारी के लिए यह उल्लेखनीय है कि आपके ही सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ। आप भी निम्न कार्यों में सहयोग दें—

(१) पढ़ाई में कमजोर व जरूरतमंद स्कूलों के छात्रों के लिए निःशुल्क कक्षाओं का प्रबन्ध करना।

(२) आर्थिक दृष्टि से कमजोर व पिछड़े वर्गों के विद्यार्थियों की पढ़ाई में अमूल्य सहयोग देने के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें प्रदान करना।

CamScanner से स्कैन किया गया

(३) विद्यार्थियों की छिपी प्रतिभा मंच पर मुखरित हो, इस भावना को ध्यान में रखते हुए सभा समय-समय पर भाषण, वाद-विवाद, निबन्ध, सामान्य-ज्ञान आदि प्रतियोगिताओंको नियमित रूप से आयोजित करने पर विचार कर रही है।

(४) समाज के कमजोर व पिछड़े हुए वर्गों के लिए चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना।

सभी स्कूल की उच्च कक्षाओं में संस्कृत, हिन्दी, संगीत, विज्ञान पढ़ने-वाले कुछ योग्य विद्यार्थियों को मासिक छात्रवृत्ति देती रहती है।

दयानन्द चल विजयोपहार

दीपावली के शुभ अवसर पर सभा की ओर से वादविवाद प्रतियो-गिताओं का गत वर्षों में आयोजन किया गया।

इस बार भी गत वर्ष की भांति ऋषि निर्वाण उत्सव, ऋषि-बोध उत्सव, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस धूमधाम से मनाये गये।

सभा-रत्न

आज समाज में एक ओर यत्र-तत्र सर्वत्र नैतिकता का पतन होता हुआ दिखाई देता है, वहीं दूसरी ओर ईमानदारी व निष्कामभाव से जीवन व्यतीत करनेवाले सेवाभावी महानुभावों की भी कमी नहीं है। सभा समाज के सम्मुख एक आदर्श चरित्र प्रस्तुत करने की दृष्टि से अपने सदस्यों में से अधिक-से-अधिक दो सदस्यों को प्रत्येक वर्ष सभा-रत्न की उपाधि देती है। यह उपाधि सभासद की कार्य-कुशलता और चरित्र को देखकर दी जाती है। अब तक निम्नलिखित सदस्यों को यह उपाधि दी जा चुकी है —

"सर्वश्री कुलभूषण, रामसरन, भारतभूषण, रमेशकुमार, सुदर्शन कुमार, नरेशकुमार, सत्यपाल, कंवलनैन, विजयबहादुर, नत्थूराम, यशपाल, कृष्णकुमार, तिलकराज, शशिभूषण, उमेशचन्द्र और कैलाश-चन्द्र।'

CamScanner से स्कैन किया गया

सेवा कार्य

सभा निर्धनों और विधवाओं की सहायता करती है। गत वर्षों में सभा ने २७,६६६-६० रुपए की सहायता की है। पिछले वर्षों में सभा ने प्रधानमन्त्री फण्ड, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्यसमाज दीवान हाल और सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा को १३२५.७५ रुपए बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ भेजे। पूर्वी पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियों के लिए बिहार सूखा पीड़ित फंड में श्रद्धानन्द ट्रस्ट को भेजे और निर्धन विद्यार्थियों को पुस्तकों के रूप में की सहायता की। महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण स्थली भिनाय कोठी, अजमेर खरीदने हेतु आर्यसमाज नाला बाजार को तथा १६७५ में बिहार के बाढ़ पीड़ितों के लिए सार्वदेशिक सभा को सहायता भेजी। १६७७ में दिल्ली के बाढ़ पीड़ितों के लिए दवाइयां दी गई। १६८१ में निर्धन विद्यार्थियों को स्वेटर दिये गये। १६६१ में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली को युवक ब्रह्मचर्य शिविर हेतु २५१ रुपए सहयोग दिया गया। १६६१ में २५० रुपए कश्मीरी विस्थापितों के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली को दिये। नवम्बर १६६१ में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली को गढ़वाल के भूकम्प-पीड़ितों के लिए ८०० रु० दिये गये। इसके अतिरिक्त सभा ने वर्ष १६६१ में ८५० रु० निर्धनों को सहायता के रूप में दिये।

आर्य धमार्थ चिकित्सालय

२१ मार्च १६५६ से यह चिकित्सालय जनता की सेवा करता रहा। जो दानी महानुभाव इस शुभ कार्य के लिए १० रुपया या इससे अधिक सहायता प्रदान करते हैं उनके नाम सभा के प्रकाशनों में प्रकाशित होते हैं।

नेताओं और विद्वानों का सहयोग

सभा को गणमान्य व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होता रहा है, जिसमें श्री रामगोपाल शालवाले, श्रीमती अरुणा आसफअली, वीर यज्ञदत्त, स्व०

CamScanner से स्कैन किया गया

श्री पंजाब राव देशमुख, स्व० स्वामी धर्मानन्दजी, स्व० श्री जगजीवन राम, स्व० डॉ० गोकुलचन्द्र नारंग, स्व० पं० बुद्धदेव मीरपुरी, स्व० प्रो० रामसिंह, श्री पी० आर० नायक, महात्मा आनन्द भिक्षु, श्री के० नरेन्द्र, स्वामी ब्रह्ममुनि, प्रिंसिपल शान्तिनारायण, स्व० पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार, श्री वीरेन्द्र एम० ए०, प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा, प्रो० हरिश्चन्द्र, पं० रविदत्त गौतम, स्व० श्री कंवरलाल गुप्त, श्री रामकृष्ण भारती, माता विद्योत्तमा यति, प्रिंसिपल जगदीश प्रसाद अग्रवाल, भारत केसरी चन्दगीराम, श्री उत्तमप्रकाश बंसल, श्री हरदयाल देवगुण, स्व० प्रिंसिपल कृष्णचन्द्र एम० ए०, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी जगदीश्वरानन्द, स्वामी आदित्यवेश, डॉ० सत्यकाम वेदालंकार, प्रो० कृष्णलाल, डॉ० प्रशान्तकुमार, स्व० रुरदारीलाल वर्मा, श्री खैरातीलाल भाटिया, डॉ० धर्मपाल, प्रो० महावीर, पं० विजयशंकर शास्त्री के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्रकाशन विभाग

यह विभाग १९५६ से अपने सदस्यों व जनता को १०९ पुस्तकें व पुस्तिकाएं भेंट कर चुका है। इस समय तक ३,४६,००० + ११०० प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

हमारी पुस्तक, विश्व का प्रथम राष्ट्रगीत, मध्य प्रदेश सरकार से पुरस्कृत हुई है। इस पुस्तक की एक हजार प्रतियां ईसाई सम्मेलन के समय बम्बई भेजी गई थी। सभा की प्रेरणा से आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा आंग्ल-भाषा में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित (Challenge to the Christian Faith) इस सम्मेलन के लिए छपाई गई।

प्रकाशन विभाग का उद्देश्य वैदिक साहित्य का प्रचार करना है। विभाग के दो प्रकार के सदस्य हैं—(१) आजीवन सदस्य (२) साधारण सदस्य।

साधारण सदस्य—न्यून-से-न्यून पच्चीस रुपये वार्षिक देनेवाले साधारण सदस्य होते हैं, इनके नाम वर्ष में सभा के एक प्रकाशन में छपते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

सदस्यों को प्रकाशन-विभाग द्वारा प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक निःशुल्क भेजी जाती है।

सदस्यों को पुस्तकें उनके उपलब्ध पते पर डाक से भेजी जाती हैं, अतः उनकी प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए अपना सही पता (पिन कोड नं०, राज्य सहित) व पता परिवर्तन की सूचना सभा को फौरन भेजना सदस्यों का कर्त्तव्य है, व पुस्तकें न मिलने पर सूचित करें। अन्यथा सभा पुस्तकें न मिलने के लिए जिम्मेदार नहीं होगी।

आजीवन सदस्य—जो न्यून-से-न्यून एक बार २०० रू० देते हैं। प्रकाशन विभाग के आजीवन सदस्यों की संख्या इस समय ६४६ है।

वाचनालय व पुस्तकालय

सभा-वाचनालय विजयनगर में सुचारु रूप से चल रहा है। वाचनालय में हिन्दी, उर्दू और आंग्ल भाषा की लगभग ३० पत्र-पत्रिकाएं आती हैं।

लगभग एक सौ से अधिक व्यक्ति दैनिक इनसे लाभ उठाते हैं। सभा का पुस्तकालय सुचारु रूप से चल रहा है। इसमें (३०००) पुस्तकें हैं। पुस्तकों में धार्मिक, सामाजिक व पाठ्य पुस्तकें शामिल हैं। युवक-युवतियां प्रत्येक रविवार प्रातः ११ से १२ बजे के बीच में पुस्तकें आदि लेने आते हैं।

सभा को गत वर्ष दिल्ली नगर निगम द्वारा ५००० रुपए अनुदान मिला। इस हेतु दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों का सभा धन्यवाद करती है।

वार्षिकोत्सव

सभा का वार्षिकोत्सव प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है, जिसमें विद्वान्, संन्यासी आमंत्रित किये जाते हैं।

४ अगस्त १९९१ को सभा के संस्थापक की स्मृति में यज्ञ का आयोजन हुआ। पं० राधाकांत शास्त्री ने यज्ञ के पश्चात् उपदेश दिया।

CamScanner से स्कैन किया गया

लेखा निरीक्षक

आगामी वर्ष सभा के आन्तरिक-लेख लेखा निरीक्षक श्री मदनलाल अरोड़ा (पाकेट ए-४७ सी, एम० आई० जी० फ्लैट, दिलशाद गार्डन दिल्ली-११००९५) और वाचनालय के लेखा-निरीक्षक एम० के० गड्ड (चार्टर्ड एकाउंटेन्ट) होंगे।

स्थिर निधि

२५-८-८१ की बैठक में अन्तरंग सभा ने निश्चय किया कि एक लाख रुपए की स्थिर निधि रखी जाए और इस धन को कोई भी अन्तरंग सभा निकाल नहीं सकती।

आर्य धर्मार्थ न्यास (पंजी)

आर्य धर्मार्थ न्यास ३-८-८१ को पंजीकृत हुआ। यह निर्धन वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सहायता देता है और निर्धनों की सेवा करता है। न्यास ने स्व० इकबाल राय वेदी की स्मृति में 'धर्म का वर्तमान राजनीति में स्थान' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई
सम्पर्क : 9029421718
पीडीएफ : आचार्य धर्मधर आर्य

CamScanner से स्कैन किया गया

वैदिक प्रश्नोत्तरी

सामान्य-ज्ञान

महर्षि दयानन्द सरस्वती

१—महर्षि दयानन्द का जन्म कहां और किस सन् में हुआ ?

२—उनके जन्म का नाम क्या था ?

३—वे कौन-सी घटनाएं थी। जिन्होंने उनके वैराग्यभाव को जाग्रत् किया ?

४—ब्रह्मचर्य-दीक्षा के समय उनका नाम रखा गया ?

५—उनकी संन्यास-दीक्षा के गुरु कौन थे ?

६—वे कितने वर्ष की अवस्था में घर से निकले और कितने वर्ष योगाभ्यास के लिए भ्रमण करते रहे ?

७—गुरु विरजानन्द के पास वे कितने वर्ष रहे ?

८—दक्षिणा के रूप में स्वामी दयानन्द, विरजानन्दजी के पास क्या लेकर गये थे। विरजानन्दजी ने दक्षिणा के रूप में किस चीज की मांग की ?

९—उन्होंने कितने वर्ष तक प्रचार-कार्य किया।

१०—उनके ब्रह्मचर्य जीवन के कोई तीन उदाहरण दो।

११—लार्ड नार्थ ब्रुक के साथ देश की स्वाधीनता के विषय में क्या बातचीत हुई ?

CamScanner से स्कैन किया गया

१२—स्वामीजी को क्षमाशीलता का कोई उदाहरण दीजिए।

१३—महर्षि ने ठाकुर कर्णसिंह के आक्रमण का सामना कैसे किया था ?

१४—किन्हीं दो स्थानों का नाम लिखो जहां के स्वामीजी के शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हों।

१५—जोधपुर के महाराजा के साथ वेश्या को देखकर स्वामीजी ने क्या उपदेश दिया था।

१६—उनके प्रमुख चार ग्रन्थों के नाम बताइए।

१७—राजस्थान की देसी रियासतों में महर्षि भ्रमण एवं प्रचार का क्या लक्ष्य था।

१८—ऋषि की मृत्यु कैसे और कहां हुई ?

१९—उनकी मृत्यु के पीछे क्या षड्यन्त्र था ?

२०—मृत्यु के समय उनके अन्तिम शब्द क्या थे ?

आर्यसमाज

—: प्रश्नोत्तरी :—

१—आर्य समाज के कितने नियम हैं ? उनमें से आपको कौन-सा नियम सबसे अधिक प्रिय है ?

२—डी० ए० वी० आन्दोलन के संचालक कौन थे ?

३—आर्य समाज के इतिहास में निम्न स्थान क्यों प्रसिद्ध हैं—

टंकारा, मथुरा, हरद्वार, बम्बई, लाहौर, अजमेर, करतापुर, बनारस, हैदराबाद।

४—आर्यसमाज के किन्हीं दो प्रसिद्ध दिवंगत नेताओं के नाम लिखिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

५—आपने आर्य युवक परिषद् से क्या सीखा ?
६—सत्यार्थप्रकाश में कुल कितने समुल्लास हैं ?
७—पंच महायज्ञ कौन से हैं ?
८—ओ३म् तीन अक्षरों के योग से बना है, वे कौन-कौन से हैं ?
९—ज्ञान का आदिस्रोत क्या है ?
१०—सृष्टि के तीन मूलकारण क्या हैं ?
११—परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम नाम क्या है ?
१२—वेद पौरुषेय है या अपौरुषय तथा उनमें इतिहास है या नहीं ?
१३—चार वर्ण तथा चार आश्रम कौन-से हैं ?
१४—स्वर्ग और नरक क्या है तथा कहां है ?
१५—तीर्थ किसे कहते हैं ?
१६—मुक्ति किसे कहते हैं ?
१७—आर्य शब्द का क्या अर्थ हैं ?
१८—क्या ज्योतिषशास्त्र झूठा है ?
१९—आर्यसमाज कितने संस्कार मानता है। किन्हीं दो संस्कारों का नाम लिखिए।
२०—सर्वप्रथम डी० ए० वी० कालेज की स्थापना कब, कहां और किसने की ?
२१—स्वामी श्रद्धानन्द ने किस शिक्षा-पद्धति का संचालन किया ?
२२—महर्षि दयानन्द की अमर पुस्तक कौन-सी है ?
२३—पं० गुरुदत्त विद्यार्थी नास्तिक से आस्तिक कैसे बने ?
२४—वेद का ज्ञान सर्वप्रथम किन महर्षियों के हृदय में प्रकट हुआ ?
२५—आर्यसमाज किन ग्रन्थों को स्वतः प्रमाण मानता है ?
२६—ईश्वर एक है अथवा अनेक तथा वह अवतार धारण करता है या नहीं ?

CamScanner से स्कैन किया गया

२७—नारी जागरण का अग्रदूत बनकर कौन आया ?

२८—आर्यसमाज तथा आर्य युवक परिषद् की स्थापना का क्या उद्देय है ?

२९—स्वामी दयानन्द की मृत्यु कैसे हुई ?

३०—आर्यसमाज के किन्हीं दो प्रसिद्ध बलिदानियों-शहीदों के नाम बताइए।

३१—भगवान् कृष्ण अथवा राम क्या परमात्मा के अवतार थे। आर्यसमाज इनका क्या स्वरूप मानता है ?

३२—ऋषि दयानन्द के गुरु कौन थे ?

३३—आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी कौन-कौन हुए हैं ?

३४—ऋषि दयानन्दकृत हिन्दी की पांच पुस्तकों के नाम लिखें।

३५—महर्षि दयानन्द ने कितनी बार विषपान किया ?

३६—आर्यसमाज को देश की वर्तमान राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए अथवा नहीं।

३७—आर्यसमाज किस धर्म को मानता है ?

३८—आर्यसमाज क्या एक सम्प्रदाय है ? नहीं तो क्यों ?

३९—सृष्टि कब बनी ?

४०—मनुष्ययोनी और पशुयोनि में क्या भेद है ?

४१—संस्कृति और सभ्यता में क्या अन्तर है ?

४२—हवन से क्या लाभ हैं ?

४३—आप श्राद्ध का क्या भाव समझते हैं ?

४४—यज्ञोपवीत में तीन तारें क्यों होती हैं ?

४५—यम पांच हैं ? नाम निर्देश कीजिए।

४६—वैदिक धर्म की अन्य धर्मों से कोई एक विशेषता बताइए ?

४७—यज्ञ में कितने प्रार्थना मन्त्र हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

४८— आर्यसमाज की स्थापना कब, कहां और किसने की ?

४९—एक आर्य को क्या-क्या धारण करना चाहिए।

५०—शुद्धि किसे कहते हैं? भारत वर्ष में शुद्धिकार्य में स्वामी श्रद्धानन्द जी का क्या योगदान है।

५१—आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में क्या अन्तर है ?

५२—शान्ति पाठ का उच्चारण कीजिए।

५३—गायत्री मन्त्र अर्थसहित लिखिए।

५४—मनुष्य कौन है ? परिभाषा लिखिए।

५५—मानव जीवन का लक्ष्य क्या है ?

५६—वैदिक समाजवाद और साम्यवाद में क्या अन्तर है ?

५७—यज्ञ का क्या अर्थ है ? इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्या है ?

५८—शहीद राम प्रसाद विस्मिल को फांसी क्यों दी गई थी ? उनके साथ शहीद होनेवाले दूसरे क्रान्तिकारी कौन-कौन थे ?

५९—आर्यसमाज जाति-पाति का जन्म से मानता है या कर्म से ?

६०—दहेज-शराब-छुआछूत तथा अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिए आप क्या उपाय सोचते हैं ?

६१—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किसानों के विषय में क्या लिखा है ?

६२—संघर्ष पहले या संगठन ?

६३—सन्ध्या किसे कहते हैं ?

६४—सन्ध्या से क्या लाभ होता है ?

६५—सन्ध्या में कितने मन्त्र हैं ?

६६—सन्ध्या कितने भागों में विभाजित है ?

६७—नमस्ते शब्द का क्या अर्थ है ?

CamScanner से स्कैन किया गया

महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रश्नों के उत्तर

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में मौरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा ग्राम में १२ फरवरी सन् १८२५ में हुआ था।

२. उनके जन्म का नाम मूलशंकर था। उन्हें मूल जी और दयालजी के नाम से भी पुकारते थे।

३. उनके वैराग्य भावको जगानेवाली तीन घटनाएं प्रमुख थी—

(क) शिव की पण्डी पर चूहों का चढ़ना, इस घटना से उन्हें मूर्ति-पूजा से घृणा हो गयी और सच्चे शिव को पाने की इच्छा जाग्रत् हुई।

(ख) बहन की मृत्यु। (ग) चाचा की मृत्यु—इन दो घटनाओं से उन्हें आजीवन ब्रह्मचारी रहकर मृत्युञ्जय बनने की प्रेरणा मिली।

४. ब्रह्मचर्य दीक्षा के समय उनका नाम शुद्धचैतन्य रक्खा गया था।

५. उनको संन्यास-दीक्षा के गुरु स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती थे।

६. वे इक्कीस वर्ष की अवस्था में घर से निकले और पन्द्रह वर्ष तक योगाभ्यास के लिए भ्रमण करते रहे।

७. गुरु विरजानन्द दण्डी के पास वे ढाई वर्ष रहे और उनसे अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का अध्ययन किया।

८. स्वामी दयानन्दजी गुरु दक्षिणा के रूप में लौंग लेकर गये थे परन्तु विरजानन्दजी ने लौंगें स्वीकार न करके उनसे

CamScanner से स्कैन किया गया

उनका जीवन मांगा था।

९. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लगभग बीस वर्ष तक प्रचार कार्य किया।

१०. उनके ब्रह्मचर्य जीवन के तीन उदाहरण निम्न हैं—

(क) दो घोड़ों की बग्घी को रोक देना।

(ख) हलाहल विषपान करके मौत को भी ठोकर लगा देना।

(ग) भारी बोझ से लदे हुए छकड़े को, जिसे दो बैल नहीं निकाल पा रहे थे, दलदल से बाहर निकल देना।

११. लार्ड नार्थ ब्रुक ने स्वामीजी से पूछा था— 'हमारे राज्य में आपको धर्म प्रचार में कोई बाधा तो नहीं है? आपके जीवन को कोई भय या संकट तो नहीं हैं?'

स्वामी जी ने उत्तर दिया—"आपके राज्य में न तो मुझे धर्म-प्रचार में कोई बाधा है और न ही किसी का कोई भय है।"

यह सुनकर नार्थब्रुक ने कहा— 'तब आप अपनी प्रार्थना में परमेश्वर से यह भी प्रार्थना कर दिया करें कि अंग्रेजों का राज्य भारत पर सदा बना रहे।"

यह सुनकर स्वामीजी ने उत्तर दिया—"इस विषय में मेरे विचार बिल्कुल भिन्न हैं। मैं तो प्रतिदिन यह प्रार्थना करता हूँ कि—अंग्रेजी राज्य भारत से शीघ्र समाप्त हो और अंग्रेज अपना बिस्तर गोलकर इंग्लैण्ड चले जाएं।

१२. स्वामीजी ने अपने विष देनेवाले जगन्नाथ को ५०० रुपये की थैली देकर उसे नेपाल भाग जाने का आदेश दिया। इससे श्रेष्ठ क्षमा का उदाहरण मिलना कठिन है।

१३. स्वामीजी ने राव कर्णसिह की तलवार उसके हाथ से छीन ली और उसके दो टुकड़े कर दिये।

CamScanner से स्कैन किया गया

१४. वाराणसी और बरेली।

१५. स्वामीजी ने कहा था—"राजा सिंह होता है और वेश्या कुतिया। राजा को कुतिया का संग करना शोभा नहीं देता।"

१६. सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय।

१७. सभी राजाओं को संघठित करके भारत को स्वतन्त्र और स्वाधीन कराना।

१८. उनकी मृत्यु जगन्नाथ रसोइया के द्वारा उनको दूध में कालकूट विष मिलाकर देने से हुई। विष उन्हें जोधपुर में दिया गया। यहां से चिकित्सा के लिए उन्हें आबू ले गये, वहां से अजमेर लाया गया। अजमेर में ही स्वामीजी की मृत्यु हुई।

१९. उनकी मृत्यु के पीछे अंग्रेजों का हाथ था। अंग्रेज उन्हें बागी फकीर समझते थे।

२०. मृत्यु के समय उनके अन्तिम शब्द थें—"हे ईश्वर! तूने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

आर्यसमाज

प्रश्नों के उत्तर

१. आर्यसमाज के नियम दस हैं। सारे ही नियम अति श्रेष्ठ है। मुझे तीसरा नियम सबसे अधिक प्रिय है।

तीसरा नियम है—'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

CamScanner से स्कैन किया गया

यह नियम आर्यसमाज को सारे मत-मतान्तरों और पन्थों से पृथक् करता है। वेद आर्यसमाज का मूलाधार है। वेद आर्यसमाज की विशेषता है। वेद नहीं तो आर्यसमाज नहीं।

२. महात्मा हंसराजजी।

३. टंकारा—महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म भूमि है।

मथुरा—गुरुवर विरजानन्द की पाठशाला और महर्षि दयानन्द सरस्वती की विद्यास्थली।

हरद्वार—यहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई थी।

बम्बई—सर्वप्रथम आर्यसमाज यहां ही स्थापित की गई थी। वस्तुतः इससे पूर्व राजकोट में २-१-१८७५ को आर्यसमाज की स्थापना हुई थी परन्तु कुछ दिन चलने के पश्चात् बन्द हो गयी थी।

लाहौर—आर्यसमाज के वर्तमान दस नियमों का निर्माण यहां ही किया गया था। प्रथम डी० ए० वी० कालेज की स्थापना यहीं हुई थी।

अजमेर—महर्षि दयानन्द का निधन यहीं हुआ था. महर्षि द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा का कार्यालय भी यहीं है।

कर्तारपुर—महर्षि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी की जन्मभूमि है।

बनारस—यहां ऋषि दयानन्द का २७ पण्डितों के साथ शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें महर्षि दयानन्द की अभूतपूर्व विजय हुई थी।

हैदराबाद—आर्यों ने निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह करके विजय प्राप्त की थी।

४. श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा और लाला लाजपत राय।

५. प्रतिदिन सन्ध्या, स्वाध्याय और व्यायाम करना तथा अनुशासन।

CamScanner से स्कैन किया गया

६. सत्यार्थप्रकाश में चौदह समुल्लास हैं और अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य हैं।

७. पञ्चमहायज्ञ निम्न हैं—

१—ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या और वेदाध्ययन), २—देवयज्ञ अग्निहोत्र, ३—पितृयज्ञ, ४—अतिथियज्ञ ५—बलिवैश्वदेवयज्ञ।

८. ओ३म् शब्द अ+उ+म्—इन तीन अक्षरों के योग से बना है।

९. ऋग् यजुः साम और अथर्व—ये चारों वेद ज्ञान के आदि-स्रोत हैं।

१०. सत्व, रज और तम—ये तीन सृष्टि के मूल कारण हैं।

११. परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' है।

१२. वेद अपौरुषेय है (परमात्मा प्रदत्त ज्ञान है) ये मनुष्यों के द्वारा नहीं बनाये गये। वेद का ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में दिया था, अतः वेद में इतिहास नहीं है।

१३. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—ये चार वर्ण हैं तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास—ये चार आश्रम हैं।

१४. सुखविशेष और उसकी सामग्री का प्राप्त होना स्वर्ग है। दुःखविशेष और उसकी सामग्री का प्राप्त होना नरक है। स्वर्ग और नरक आकाश में नहीं हैं। यहीं पृथिवी पर हैं। उत्तम गृहस्थ का नाम स्वर्ग है और बिगड़े हुए गृहस्थ का नाम नरक है।

१५. जिनके द्वारा मनुष्य तर जाए उन्हें तीर्थ कहते हैं। माता-पिता, आचार्य, अतिथि, सत्संग, ब्रह्मचर्य, सत्य, अहिंसा, सर्वभूत दया, क्षमा, जितेन्द्रियता, यज्ञ आदि का नाम तीर्थ है। नौका आदि भी तीर्थ हैं क्योंकि इनके द्वारा नदियों को पार करते हैं। जलवाले स्थल हरद्वार आदि का नाम तीर्थ नहीं है!

१६. संसार के बन्धनों से छूटने का नाम मुक्ति या मोक्ष है।

१७. आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ मनुष्य। जो शान्त, मन को वश

CamScanner से स्कैन किया गया

में रखनेवाला, सहनशील, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दानशील, दयालु और नम्र होता है, उसे आर्य कहते हैं।

१८. ज्योतिष दो प्रकार का होता है—गणित और फलित। इनमें गणितशास्त्र सत्य है तथा फलित ज्योतिष झूठा और पाखण्ड है।

१९. आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने १६ संस्कार लिखे हैं। सभी महत्वपूर्ण हैं। दो संस्कार निम्न हैं—

(१) नामकरण संस्कार

(२) उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार

२०. ८ जून १८८६ को लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालिज की स्थापना की गयी। तपोमूर्ति महात्मा हंसराज ने सर्वप्रथम इसके लिए अपना जीवन और जवानी होम दी।

२१. स्वामी श्रद्धानन्दजी ने गुरुकुल शिक्षा-पद्धति का संचालन किया।

२२. सत्यार्थप्रकाश

२३. गुरुदत्त विद्यार्थी महर्षि दयानन्द के जीवन के अन्तिम दृश्य को देखकर आस्तिक बने। उन्होंने देखा जिस व्यक्ति के रोम-रोम पर फफोले हो रहे हैं, मर्मान्तक वेदना है परन्तु मुखमण्डल पर दिव्य आभा, तेज और मुस्कराहट है, इसका कारण क्या हो सकता है? मृत्यु से इन्हें तनिक भी भय नहीं, मृत्यु का आलिंगन करने के लिए ऐसे तैयार हैं जैसे प्रभु से मिलने जा रहे हों—इस दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त परम आस्तिक बन गये।

२४. वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में चार ऋषियों को मिला था जिनके नाम है—१. अग्नि २ वायु ३. आदित्य और ४. अंगिरा।

२५. आर्यसमाज चार वेद संहिताओं (ऋग्यजुः, साम और अथर्व) को स्वतःप्रमाण मानता है।

२६. ईश्वर एक है, अनेक ईश्वर नहीं हैं। हां, एक ही ईश्वर

CamScanner से स्कैन किया गया

के नाम अनेक हैं। ईश्वर अवतार नहीं लेता।

२७. महर्षि दयानन्द सरस्वती

२८. आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने वेद और योग के प्रचार तथा प्रसार के लिए की थी। इस बात का उल्लेख आर्यसमाज के नियमों में है। आर्यसमाज का तीसरा नियम है—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

छठा नियम है—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्योद्देश्य है—अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्ययुवक परिषद् का उद्देश्य है—नई पीढ़ी को आकर्षित करके आर्यसमाज की ओर लाना!

२९. महर्षि दयानन्द की मृत्यु उनके पाचक जगन्नाथ द्वारा उनको दूध में कालकूट विष मिलाकर पिलाने से हुई थी।

३०. आर्यसमाज ने धर्मरक्षा के लिए अनेक पुरुषों का बलिदान दिया है, दो नाम निम्न हैं—

(१) अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी।

(२) आर्यपथिक पं० लेखरामजी।

३१. मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा योगिराज कृष्ण परमात्मा के अवतार नहीं थे। परमात्मा सर्वव्यापक है फिर उसका अवतरण कैसा? कहीं ऊपर चढ़ा हुआ होता तो उतरता। श्रीराम, कृष्ण आदि महापुरुष थे, महामानव थे। आर्यसमाज उन्हें इसी रूप में मानता है।

३२. महर्षि दयानन्द के योग के गुरु थे—ज्वालानन्द गिरी और शिवानन्द पुरी तथा विद्या के गुरु थे स्वामी विरजानन्द दण्डी।

३३. आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथियों की नामावली बहुत लम्बी है। यहां कुछ नामों का निर्देश किया जाता है—महर्षि

CamScanner से स्कैन किया गया

दयानन्द सरस्वती, आर्यपथिक पं० लेखरामजी, स्वामी दर्शनानन्दजी, पं० गणपतिजी शर्मा, पं० मुरारी लाल जी, पं० मनसा रामजी वैदिक तोप, पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० शान्तिप्रकाशजी०, पं० रामचन्द्रजी देहलवी, श्री अमर स्वामीजी महाराज, पं० रामदयालु जी, पं० बिहारी लाल जी शास्त्री आदि।

३४. १. सत्यार्थप्रकाश २. संस्कारविधि ३. गोकरुणा-निधि ४. व्यवहारभानु ५. आर्योद्देश्य रत्नमाला।

३५. महर्षि दयानन्द ने १७ बार विषपान किया। (इस विषपान में तलवार से आक्रमण, शस्त्र से मारने पानी में डुबोने के प्रयत्न आदि भी सम्मिलित हैं)।

३६. आर्यसमाज को देश की वर्तमान राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए परन्तु भाग लेने से पूर्व व्यक्तियों का निर्माण करना चाहिए जो सदाचारी, चरित्रवान् धर्मनिष्ठ हों जिन्हें किसी भी मूल्य पर खरीदा न जा सके।

३७. आर्यसमाज वेद को मानता है। वेद में जो कुछ प्रतिपादन किया गया है, वह धर्म है जो वेद विरुद्ध है, वह अधर्म है।

३८. आर्यसमाज दो शब्दों के मेल से बना है—आर्य+समाज। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ और समाज का अर्थ है समूह, संगठन। श्रेष्ठ मनुष्यों के समूह अथवा समुदाय को आर्यसमाज कहते हैं।

३९. सृष्टि को बने हुए (संवत् १९४९ में) १९,६,०८५३,०९२ होते हैं।

४०. मनुष्य और पशुओं में आत्मा तो एक-सा ही है अन्तर यह है कि मनुष्य योनी उभययोनि है (कर्म और भोगयो) है। इस योनि में मनुष्य पिछले जन्म में किये हुए कर्मों का भोग भी भोगता है और नये कर्म भी करता है। पशुयोनि केवल भोगयोनि है। मोक्ष की प्राप्ति केवल मानवयोनि में ही हो सकती है, अन्य किसी योनि में नहीं।

CamScanner से स्कैन किया गया

४१. संस्कृति आन्तरिक वस्तु है और सभ्यता बाह्य। एक सूटिडबूटिड मनुष्य सभ्य हो सकता है परन्तु वह संस्कृत भी हो यह आवश्यक नहीं है।

४२. हवन के लाभ निम्न है—

(क) वेद की रक्षा होती है।

(ख) परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त होती हैं।

(ग) वायु शुद्ध होती है उससे उत्तम वृष्टि होती है।

(घ) अनेक प्रकार के रोगों का नाश होता है।

(च) अतिवृष्टि और अनावृष्टि को रोका जा सकता है।

४३. श्रद्धा का अर्थ —श्रत्+धा=सत्य में धारणा। जो वस्तु जैसी है, उसे वैसा ही मानना। जो कार्य श्रद्धापूर्वक किया जाये, उसका नाम श्राद्ध है। मरे हुए बाप-दादा के नाम पर ब्राह्मणों को भोजन खिलाना अवैदिक है।

४४. यज्ञोपवीत की तीन तारें हमें अनेक सन्देश देती हैं—

(१) देव, ऋषि और पितृ, ऋण से अनृण होओ।

(२) माता-पिता और आचार्य की सेवा करो।

(३) सत्व, रज और तम—तीन गुणों से ऊपर उठकर त्रिगुणातीत बनो।

(४) आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतक तीन प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाने का प्रयत्न करो।

(५) ज्ञान, कर्म और उपासना को अपने जीवन का अंग बनाओ।

(६) प्रातः, मध्याह्न और सायं के कर्तव्यों को निष्ठापूर्वक करो।

४५. पांच यम निम्न हैं—

(१) अहिंसा—मन, वचन, कर्म से किसी के प्रति वैर की भावना न रखना, (२) सत्य, (३) अस्तेय—चोरी न करना

CamScanner से स्कैन किया गया

(४) ब्रह्मचर्य का पालन करना, (५) अपरिग्रह, अभिमान न करना और पदार्थों का बहुत संग्रह न करना।

४६. वैदिक धर्म एकेश्वरवाद का समर्थक है जबकि अन्य मत और पन्थ अनेक देवी, देवताओं, पीर-पैगम्बर और मिथ्या कथा-कहानियोंमें विश्वास करते हैं।

४७. यज्ञ में प्रार्थना मन्त्रों की संख्या आठ है।

४८. आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में चैत्र शुक्ल पञ्चमी (१० अप्रैल १८७५) को की थी।

४९. प्रत्येक आर्य को यज्ञोपवीत और चोटी धारण करनी चाहिए।

५०. जो वैदिकधर्म से भिन्न मत और पन्थावलम्बी हैं, उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित करने को शुद्धि कहते हैं।

श्रद्धानन्द जी ने लाखों मलकानों की शुद्धि की। उनके शुद्धि कार्य को देखकर मुसलमान बौखला उठे और एक धर्मान्ध मुसलमान ने उन्हें गोली मार दी।

५१. सैद्धान्तिक रूप से दोनों में कोई अन्तर नहीं है। वैदिक धर्म के प्रचार के दृष्टिकोण से आर्य प्रतिनिधि सभा की मान्यता है कि वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार गुरुकुल प्रणाली से अधिक व्यापक रूप में हो सकता है जबकि आर्यप्रादेशिक सभा इसके लिए स्कूल कालिजों को अधिक उपयुक्त समझती है।

५२. द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्वं शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि।।

५३. ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। हे सर्वरक्षक! हे सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मन्। हम, संसार को उत्पन्न करनेवाले प्रकाशकों के प्रकाशक आपके वरण करने योग्य तेजस्वरूप को

CamScanner से स्कैन किया गया

अपने हृदय में धारण करते हैं। धारण किया हुआ वह तेज हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

५४. मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं कि चाहे वे महा-अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हो उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महा बलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रिया चरण सदा किया करें। —महर्षि दयानन्द

५५. मानव जीवन का लक्ष्य है—धर्मपूर्वक अर्थ = धन का उपार्जन करते हुए, इष्ट कामनाओं को भोगते हुए मोक्ष की प्राप्ति।

५६. वैदिक समाजवाद धर्म और परमेश्वर में विश्वास रखता है जबकि साम्यवाद में धर्म और ईश्वर का कोई स्थान नहीं है। साम्यवाद केवल मनुष्यों तक ही सीमित है जबकि वैदिक समाजवाद में बलिवैश्वदेवयज्ञ के द्वारा कुत्ता, कौआ, कीट और पतंग को भी भोजन देने का निर्देश किया गया है। साम्यवाद 'खाओ, पिओ और मोज करो' के सिद्धान्त को मानता है। इस वाद में परलोक की सत्ता नहीं है। वैदिक समाजवाद त्यागपूर्वक उपभोग करने का उपदेश देता है और पुनर्जन्म में विश्वास करता है।

५७. यज्ञ शब्द यज् धातु से बनता है जिसका अर्थ है—देव-पूजा, संगतिकरण और दान।

हवन में भी पदार्थों का संगतिकरण होता है। देव+जड़ और चेतन दोनों प्रकार के देवों को दान—आहुतिदान से तृप्ति की जाती है।

यज्ञ में जो पदार्थ डाले जाते हैं वे नष्ट नहीं होते, क्योंकि

CamScanner से स्कैन किया गया

Matter is industru ctable and increatable अग्नि में डाले हुए पदार्थ सहस्त्रों गुणा सूक्ष्म हो जाते हैं। यज्ञ के द्वारा वायु-प्रदूषण दूर होता है। उत्तम वृष्टि होती है, रोगों का नाश होता है।

५८. शहीद राम प्रसाद और उनके साथी भारत को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। अपने संगठन के कार्यकलाप के लिए धन प्राप्त्यर्थ इन्होंने काकोरी में सरकारी कोष को, जिस रेल द्वारा ले जाया जा रहा था, लूटा। इसी अपराध में उन्हें पकड़ लिया गया और फांसी दी गई। शहीद अशफाकुल्ला को भी उनके साथ फांसी दी गई थी।

५९. आर्यसमाज जाति-पाति को जन्म से नहीं कर्म से, गुण-कर्म और स्वभाव से मानता है। यदि ब्राह्मण के घर में उत्पन्न होकर कोई मूर्ख है कि वह ब्राह्मण नहीं शूद्र है। इसी प्रकार शूद्र के घर में उत्पन्न होकर यदि कोई विद्वान् बन जाए या शूरवीर हो जाए तो वह शूद्र न रहकर ब्राह्मण या क्षत्रिय की श्रेणी में आ जाएगा।

६०. दहेज, शराब और छूआछात को दूर करने के लिए इनके विरुद्ध लगंर लंगोटे कसकर खड़ा होना होगा। दहेज के लिए युवक आगे आएं और प्रतिज्ञा करें कि हम किसी भी प्रकार का दहेज नहीं लेंगे। युवतियां प्रतिज्ञा करें कि हम दहेज लेने वाले युवकों से विवाह नहीं करेंगी, चाहे जीवनभर कुंवारी भले ही रहें। शराब की दुकानों पर पिकेटिंग होनी चाहिए साहित्य लिखकर लोगों में वितरित करना चाहिए। छूआछात को दूर करने के लिए लोगों को समझना चाहिए कि अछूत तो सिंह, व्याघ्र, मधुमक्खी आदि हैं।

अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिए ज्ञान की ज्योति जगानी चाहिए। जितना ज्ञान बढ़ेगा, उतना ही अन्धविश्वास नष्ट होगा।

CamScanner से स्कैन किया गया

६१. महर्षि दयानन्द ने किसानों को 'राजाओं का राजा' लिखा है।

६२. पहले संगठन फिर संघर्ष। संगठित होकर ही संघर्ष किया जा सकता है।

६३. सम्यक् ध्यायन्ते ध्यायते वा यस्यांसा संध्या।

जिसमें परमात्मा का भली-भांति ध्यान किया जाता है, उसे संध्या कहते हैं। संध्या दो संधिवेलाओं में की जाती है—प्रातः और सायं।

६४. संध्या से आत्मा का परमात्मा से मेल होता है। संध्या में अपने जीवन की पड़ताल करते हुए हम दोषों को दूर करते हैं इन्द्रियों को पवित्र एवं बलिष्ठ बनाते हैं।

६५. संध्या में १६ मंत्र हैं।

६६. संध्या निम्न ११ भागों में विभाजित है—

६७. अयोध्याप्रसादजी वैदिक मिशनरी ने नमस्ते का अर्थ इस प्रकार किया है—With all the Knowledge of my mind, with all the strength of my arms, with all the love of my heart, I bow to the sould unto you अर्थात् मेरे मस्तिष्क जितना ज्ञान है, मेरे हाथों में जितनी शक्ति है और हृदय में जितना प्यार है—उस सबके साथ मैं आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हूँ। संक्षेप में नमस्ते का अर्थ है मैं आपका मान्य—आदर करता हूं।

(१) शिखाबन्धन (२) आचमन (३) इन्द्रिय स्पर्श (४) मार्जनमन्त्र, (५) प्राणायाम (६) अघमर्षण (७) मनसा परिक्रमा, (८) उपस्थान (९) गायत्रीजप (१०) समर्पण और (११) नमस्कार।

उत्तरदाता—

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
एच-१/२, माडल टाऊन-३,
दिल्ली-९

CamScanner से स्कैन किया गया

विद्वानों की सम्मतियां

'दिल्ली की आर्य कुमार सभाओं में यह सभा सबसे उत्तम कार्य कर रही हैं।' —स्व० श्री देवी दयाल आर्य।

'यह जीवित जाग्रत् सभा है।' —सम्पादक, सार्वदेशिकक।

'सभा के प्रकाशन विभाग से देश और जाति का बहुत उत्तम कार्य होने की संभावना है।' स्व० कविराज हरिनाम दास बी० ए०

'आप वेद प्रचार, वैदिक साहित्य की सेवा कर रहे हैं, यह सराहनीय है। —स्व० चौ० प्रताप सिंह, करनाल।

'वह समय दूर नहीं जब यह छोटा-सा पेड़ एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर वैदिक साहित्य का अधिक प्रकाशन कर सकेगा।'

—स्व० डॉ० गोकुल चन्द नारंग।

'साहित्य के कार्य में आर्यसमाज दीवान हाल को आर्य कुमार सभा किंग्जवे का अनुकरण, करना चाहिए।

—'पी० पी० जोशी, भूतपूर्व मन्त्री आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली।

साहित्य के क्षेत्र में आर्य कुमार सभा, किंग्जवे का कार्य प्रशंसनीय हैं।

—स्व० श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय

'आपका प्रकाशन विभाग वैदिक संस्कृति का उत्तमोत्तम संरक्षण कर रहा है। 'गीत बावनी' वेद की रचनाओं का निचोड़ है, पढ़कर मन प्रसन्न हो जाता है।' —श्रीमती दमयन्ती देवी, फगदाड़ा।

'यह संस्था विद्यार्थियों के निर्माण में रुचि ले रही है। वास्तव में यही सेवा है। मैं इस संस्था के लिए मंगल कामना करता हूं।

—श्री विद्याधर एम० एल० ए०, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, शिमला।

'आर्यकुमार सभा किंग्जवे उपयोगी पुस्तकों को प्रकाशित करके प्रशंसनीय कार्य कर रही है।' —स्व० स्वामी धर्मानन्द।

आर्यकुमार सभा का प्रकाशन विभाग राष्ट्र को एक अनोखी देन है।

—श्री सरदारी लाल वर्मा, भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।

CamScanner से स्कैन किया गया

आर्य कुमार सभा किंग्जवे दिल्ली द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
[illegible] सुधा	संकलित	१.५०
नभ के तारे	डॉ० रमेश कुमार लौ	२.००
स्वर्ण सिद्धान्त	स्वामी जगदीश्वरानन्द	२.००
वैदिक राजनीति	पं० सुरेशचंद्र वेदालंकार	४.००
वेद और आर्य समाज—१	डॉ० रामटिकाया गुलाटी	३.००
" " —२	" "	३.००
आधुनिक चुनाव	श्री चमनलाल	१.००
मनुष्य और मृत्युंजय	प्रो० प्रताप सिंह	३.००
मोक्ष की सीढ़ियां—१	महात्मा देवेश भिक्षु	४.००
" " —२	" "	४.००
वैदिक धर्म की जय	पं० मनसाराम वैदिक तोप	१.००
वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा है	महता रामचन्द्र शास्त्री	१२.५०
लाला लाजपत राय का बलिदान	स्व० रमेश कुमार	१.००
यज्ञ से प्रदूषण-निवारण	आचार्य रविदत्त गौतम	१.५०
वैदिक प्रश्नोत्तरी	स्वामी जगदीश्वरानन्द	१.५०

अन्त में हम जनता से अपील करते हैं कि तन-मन-धन से सभा की सहायता करें तथा नवयुवकों और कुमारों से अनुरोध करती है कि अधिक से अधिक सभा व इसके प्रकाशन विभाग के साधारण, आजीवन सदस्य बनकर सक्रिय सहयोग दें। सभा के प्रकाशनों को मंगाकर उत्तम साहित्य की वृद्धि में योगदान दें। अपने बच्चों, स्कूल-कालेज के विद्यार्थियों को सभा का उत्तम साहित्य पढ़ने को दें।

—सत्यप्रकाश
(प्रकाशन मंत्री)

मुद्रक : भाटिया प्रेस, २५७४ रघुबरपुरा नं० २, गांधीनगर, दिल्ली-३१

CamScanner से स्कैन किया गया